प्रथम अध्याय

"मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास"

प्रथम अध्याय

''मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास''

प्रस्तावना -

उपन्यास आधुनिक युग का 'महाकाव्य' है। यह मानवी जीवन और मानव चरित्र को चित्रित करनेवाला साधन है। यह मनुष्य के जीवन-चरित्र की व्याख्या करते हुए उनके रहस्यों का उद्‌घाटन भी करता है। प्रकृति का प्रत्येक रहस्य, मानवी जीवन का हर पहलू जब किसी महान रचनाकार के कलम से निकलता है तो वह साहित्य का 'रत्न' बन जाता है। उपन्यास में संपूर्ण समाज जीवन का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की स्थापना करनेवाला साहित्य समाज हित के लिए कार्यरत रहता है। साहित्य युग की धड़कन, शाश्वत मूल्यों का संदेश देता है। ''वह समाज और राष्ट्र के जीवन का निर्माण ही नहीं करता उसे परिष्कृत नैतिक और पारदर्शी दिशा भी देता है।''[1] साहित्यकार युग द्रष्टा तथा युग स्रष्टा होता है। वह अतीत के आधार पर वर्तमान को परखता है और आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिए आदर्श छोड़ जाता है। समाज जीवन तथा उसकी समस्याओं को समझने के लिए साहित्य एक प्रमुख माध्यम है। साहित्यकार अपनी रचना में उच्चवर्ग निम्नवर्ग और मध्यवर्ग का चित्रण करता है। इन तीनों वर्गों से ही 'समाज' बनता है। समाज एक ऐसी व्यवस्था या संस्था है, जिसमें व्यक्ति अपने आवश्यकताओं एवं उद्‌देश्यों की पूर्ति करता है।

साहित्य की नींव समाज रहा है। जिस प्रकार की जरूरतें, आवश्यकताएँ रहती है, उसी प्रकार का साहित्य लिखा जाता है। अच्छा साहित्य और अच्छा समाज मिलकर ही मानवी जीवन उन्नत एवं समृद्‌ध बनता है। इस पर टिप्पणी करते हुए राजेश शर्मा लिखते हैं- ''साहित्य वस्तुतः जीवन और समाज से भाव सामग्री लेकर अपने शरीर का निर्माण कर फिर वह सब जीवन और समाज को ही अर्पित कर देता है।''[2] यहाँ स्पष्ट है समाज सिर्फ मानव समूह नहीं और साहित्य न मनोरंजन का साधन है बल्कि दोनों का परस्पर अभिन्न एवं अटूट संबंध है।

1.1 समाज परिभाषा एवं स्वरूप -

अंग्रेजी के 'SoïÈiety' शब्द का पर्यायवाची शब्द 'समाज' है। 'SoïÈiety' शब्द लॅटिन के 'SoïÈius' शब्द से बना है इसका अर्थ है- 'सहजीवन'। मनुष्य समाजशील प्राणी है। वह समाज के बगैर नहीं रह सकता। उसकी भौतिक, मानसिक, आर्थिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति में समाज सहायक होता है। 'व्यक्ति' समाज की लघुत्तम ईकाई है। व्यक्ति और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। समाज के अंतर्गत 'समूह' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आदिकाल से लेकर आज तक के इतिहास से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य समूह में रहनेवाला प्राणी है। मानव जीवन के चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष सभी समाज के अंतर्गत आते हैं और इसकी पूर्ति भी समाज में रहकर की जाती है।

'समाज' शब्द को अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है। विश्व हिंदी कोश में 'समाज' शब्द का अर्थ इस प्रकार है- ''समूह, संघ, गिरोह, दल, सभा, एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय करनेवाले लोग, जो मिलकर अपना-अपना अलग 'समूह' बनाते हैं उसे समाज कहते हैं।''[3] नालंदा विशाल शब्दसागर के अनुसार- ''1. समूह, गिरोह। 2. एक जगह रहनेवाले या एक ही प्रकार का कार्य करनेवाले लोगों का दल या समूह। 3. किसी विशेष उद्देश्य से स्थापित सभा या संस्था ही समाज है।''[4] स्पष्ट है समाज एक व्यापक संकल्पना है। उसकी परिधि विशाल है। डॉ. कुंवरपाल सिंह 'समाज' के संदर्भ में लिखते हैं- ''समाज का अस्तित्व हमेशा किसी सामाजिक संरचना में पाया जाता है। उसकी चाहे जो भी विशेषताएँ हो पर उसमें सामुदायिक चरित्र निश्चित रूप से मिलता है।''[5] डॉ. यज्ञदत्त शर्मा का विचार है- ''जब बहुत से मानव एक स्थान पर एकत्रित होकर रहने लगे जो उनकी बाहरी रक्षा के साथ-साथ उसके नित्य जीवन से संबंध रखनेवाले नियमों को भी आवश्यकता हुई। इसी नियमों के आधार पर समाज का निर्माण हुआ।''[6] लगता है आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज का निर्माण हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज का निर्माण हुआ है। समाज व्यक्तियों का समूह है, समाज एक दिव्यात्मक, संगठन, संस्था, सभा तथा समूह है, जिसमें मानवीय संबंध और विशिष्ट उद्देश्य निहित होते हैं। वह अनेक लोगों की

आकांक्षाओं की पूर्ति तथा समस्याओं के समाधान के लिए बनाई गई एक संस्था है। समाज का उद्देश्य व्यक्ति समाज की रक्षा, उनके समस्याओं का समाधान, उनका उन्नयन एवं हित है। अतः समाज एक व्यापक शब्द है, जो व्यक्ति से परिवार, परिवार से विश्वव्यापी मानवसमूह तक स्वीकृत किया जाता है। समाज में निरंतर परिवर्तन पाए जाते हैं, जो इसमें समानता एवं असमानता या भेद निर्माण करते हैं।

1.2 वर्गविभाजन या समाज का वर्गीकरण -

मानव समाज सदा वर्गों में विभाजित रहा है। सामाजिक परिवर्तन एवं समाज विकास के साथ वर्ग के भेद भी बदलते गए। सामाजिक वर्ग से तात्पर्य एक ऐसा वर्ग जो समाज की असमानता (आर्थिक असमानता) के कारण अस्तित्व ग्रहण करता है और इस वर्ग के सदस्यों का कुछ विशिष्ठ गुणों के कारण एक वर्ग दिखाई देता है। प्रसिद्ध विचारक अरस्तू ने सामाजिक वर्गीकरण के संबंध में लिखा है- ''प्रत्येक राज्य में तीन वर्ग होते हैं- एक अत्याधिक धनी वर्ग होता है, दूसरा अत्याधिक गरीब वर्ग और तीसरा वर्ग मध्यवर्ग होता है। मध्यम वर्ग तीनों वर्गों में उत्तम होता है, क्योंकि यह वर्ग बुद्धि संगत सिद्धांतों पर आधारित होता है।''[7] 'हिंदी साहित्य कोश' में आधुनिक समाज को तीन वर्गों में बाँट दिया है- ''1. बुर्जुआ (शोषक), 2. मध्यवर्ग अर्थात् मिडिल क्लास, 3) निम्नवर्ग।''[8] वर्ग विभाजन का मूल अधार 'अर्थ' और 'व्यवसाय' है। समाज का एक वर्ग अथार्जन से धनवान बन गया है तो दूसरा अर्थहीनता के कारण उपेक्षित बना अपनी रोजी-रोटी के लिए जूझ रहा है। इसके बीच में अटका हुआ तीसरा वर्ग है- मध्यवर्ग, जो कुछ उच्चवर्ग तो कुछ निम्नवर्ग से मिला हुआ है। समाज व्यवस्था में विभाजक तत्त्व रहे हैं। विभिन्न श्रेणियों में विभाजित समाज व्यवस्था रही है, चाहे वह शासक हो या शासित, मालिक हो या मजदूर। डॉ. भूपसिंह भूपेंद्र के अनुसार ''समाज में संपत्ति, शक्ति और सम्मान के कारण सार या वर्ग बनते हैं। संपत्ति के कारण वर्ग, शक्ति में अंतर होने से राजनैतिक दल और सम्मान से भेद से स्तर निर्माण होते हैं।''[9] यहाँ स्पष्ट है समाज विभाजन या वर्गीकरण के अनेक कारण हैं। साहित्यकारों ने समाज परिवर्तन या वर्गीकरण को अपनी प्रतिभा शक्ति के बल पर इसको चित्रित किया है। अतः समाज को उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में विभाजित किया जाता है।

1.2.1 उच्चवर्ग -

समाज का आधार अर्थ-धन-संपत्ति है। उच्चवर्ग पूँजीपति धनवान रहा है। उच्चवर्ग आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। अन्य दो वर्गों की तुलना में इस वर्ग के लोगों का जीवन यापन ऊँचे दर्जे का होता है। अपने जीवन में भौतिक सुविधाओं का लाभ यह लोग उठाते हैं। समाज में इन लोगों की संख्या बहुत कम है। धन प्राप्ति के लिए इस वर्ग के लोग अन्य वर्ग का शोषण करते हैं। इसके लिए मानवी मूल्यों की हत्या करने से भी नहीं कतराते हैं। उत्पादनों के साधनों पर इनका पूरा अधिकार होता है। उनमें भी उच्च-उच्च वर्ग और निम्न-उच्चवर्ग यह दो भेद हैं। उच्चवर्ग के अंतर्गत वे पूँजीपति लोग आते हैं जिनका उत्पादन साधनों पर संपूर्ण अधिकार होता है। इसमें राष्ट्र के सर्वोच्च प्रशासक, अधिकारी, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सर्वाधिक धनी उद्योगपति तथा मिल मालिक आदि आते हैं। निम्न-उच्चवर्ग में वे लोग आते हैं जिनका उत्पादन साधनों पर अंशिक अधिकार होता है। इसमें राष्ट्र के मंत्रियों, व्यवसायिक, सर्वोच्च न्यायालयों के न्यायाधीश तथा वकील आदि का समावेश होता है। लगता है 'जीवो जीवस्य जीवीतम्' इस सूत्र को नकारकर यह लोग समाज के निम्न स्तर के लोगों का शोषण करते हैं।

1.2.2 मध्यवर्ग -

'मध्यवर्ग' उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग के बीच का वर्ग है। संख्या की दृष्टि से समाज में सबसे बड़ा वर्ग है। इसमें उच्च-मध्यवर्ग और निम्न-मध्यवर्ग यह दो भेद हैं। उच्च-मध्यवर्ग जो निम्न-उच्चवर्ग से अधिक प्रभावित रहता है और उसी प्रकार का जीवन जीने की जीजिविषा रखता है। उच्चवर्ग को भोगवादिता, विलासपूर्ण जीवन के प्रभाव से यह वर्ग अधिक ग्रस्त होता है। मध्यवर्ग के परिवारों में अलगावपन कुंठा, निराशा, अशांत दांपत्य जीवन, प्रेम समस्या तथा अनैतिक यौन संबंध आदि समस्याएँ दिखाई देती हैं। इसके मूल में शहरीकरण, औद्योगिकरण, भूमंडलीकरण, परिवेश का दबाव आदि कारण दिखाई देते हैं। निम्न-मध्यवर्ग विचारों और आदर्शों में क्रांतिकारी होता है। यह वर्ग तथाकथित रूढ़ि-परंपराओं, मर्यादाओं का पालन करके घुटन में जीवनयापन करता है। इस वर्ग में बुद्धिजीवी, सफेदपोश, महावारी वेतनभोगी, छोटे-छोटे उद्योगी, डॉक्टर-कलाकार, अध्यापक आते हैं। डॉ. अर्जुन चव्हाण के अनुसार ''मध्यवर्ग के अंतर्गत मिल मालिक, बँक कर्मचारी, बँक प्रबंधक, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अध्यापक,

व्याख्याता, लिपिक, पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों के संपादक, अनुवादक, लेखक, कवि, उच्च स्तरीय किसान, होटल मालिक, उद्योगपति, पुलिस तथा प्रशासकीय अधिकारी आदि आते हैं।''[10] अतः मध्यवर्ग समाज के आदर्शों, मूल्यों को ढोने के लिए मजबूर है और आधुनिक युग की समस्याओं में जीने के लिए शापित है।

1.2.3 निम्नवर्ग -

निम्नवर्ग के जीविका या उत्पादन का प्रमुख साधन शारीरिक श्रम है। ये लोग प्रत्यक्ष श्रम करके, पसीना बहाके, मजदूरी करके अपनी जीविका चलाते हैं। अपनी रोजी-रोटी तथा सामान्य आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इन्हें संघर्ष करना पड़ता है। यह वर्ग अशिक्षा, अंधविश्वास, अनीति, स्वैराचार से ग्रस्त होने पर भी अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं दिखाई देता है। अर्थाभाव के कारण इनका जीवन दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर होता है। इस वर्ग का शोषण उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग करता है। वस्तुतः यह वर्ग उनके हाथों की कठपुतली बना रहता है। डॉ. अर्जुन चव्हाण 'निम्नवर्ग' के बारे में लिखते हैं- ''इस वर्ग के अंतर्गत कारखानों या मिलों में काम करनेवाले मजदूर, श्रमिक, दूसरों के जमीन पर काम करनेवाले किसान आते हैं। वह अपने श्रम का मूल्य वेतन में पाते हैं।''[11] अतः निम्नवर्ग समाज को उच्चवर्ग समाज अपने स्वार्थपरकता के कारण रौंदता है। समाज व्यवस्था में निम्नवर्ग सदा ही शोषित, पीड़ित रहा है, चाहे वह जाति-धर्म, कर्म के अधार पर क्यों न बना हो। आज जाति व्यवस्था का महत्त्व नहीं लेकिन 'अर्थ' के प्रभाव के कारण समाज का निम्नवर्ग और गरीब होता चला जा रहा है।

यह स्पष्ट है समाज का वर्गीकरण इन तीन वर्गों में अंतिम नहीं है, इसमें सामाजिक परिवर्तन से निरंतर बदलाव आ रहे हैं। प्रत्येक वर्ग में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग होता है इसी कारण समाज का अंतिम विभाजन देना अत्यंत कठिन कर्म बन जाता है।

1.3 मध्यवर्ग परिभाषा एवं स्वरूप -

मध्यवर्ग का स्वरूप नामकरण के साथ जुड़ा हुआ है। 'मध्यवर्ग' शब्द का उच्चारण करते ही किसी बीच की स्थिति का बोध होता है। मध्यवर्ग का संबंध समाज के उन लोगों के स्तर से होता है जो न अमीर हैं और न गरीब। मध्यवर्ग शब्द अंग्रेजी के 'Middle Class' शब्द

का पर्यायवाची है। मध्यवर्ग बीसवीं शती की बहुचर्चित संकल्पना है। मध्यवर्ग मूलतः व्यवस्था की देन है और निम्नवर्ग की उपज। श्रम को त्यागकर वह व्यवस्था की मशनरी का अंग बना है। यह वर्ग उच्चवर्ग के साथ खड़ा होना चाहता है, उनके विचारों, चुनी हुई राहों पर चलना चाहता है, लेकिन अपने आदर्शों एवं रीति-रिवाजों को भी अपने पल्लू में संजोए हुआ है। समाज में मध्यवर्गीय लोगों की संख्या अन्य दो वर्गों से अधिक है। वैसे तो उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में भी एक मध्यवर्ग होता है। मध्यवर्ग को किसी एक परिभाषा में बांधना बहुत ही कठिन कार्य है, लेकिन अनेक विद्वानों ने इसे अपने-अपने दृष्टिकोण से व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

'Middle Class' शब्द को अंग्रेजी के 'Oxford Dictionary' में इस प्रकार व्याख्यायित किया है- "Middle Class Means which class of society between the 'Upper' and 'Lower' class, several of those were shopkeepers and professional men."[12] (अर्थात् मध्यवर्ग समाज के उच्चवर्ग और निम्नवर्ग श्रेणी के बीच का वर्ग है, जिसमें व्यवसाय, व्यापार, क्रय-विक्रय करनेवाले लोग आते हैं।) मध्यवर्ग के संदर्भ में 'Encyclopaedia of social science' में लिखा है- "The middle class includes within its ranks the middling size enterpreneur employee in Industry and Trade : the simple producer of good such as the artisan and farmar, the small spopkeeper and trades man and the official salaried employee."[13] (मध्यवर्ग अपनी समाओं में उद्योग और व्यापार के मँझली स्थिति के उदयमकर्ता जैसे शिल्पी और किसान अर्थात् वस्तुओं के छोटे उत्पादक, छोटे दुकानदार और व्यापारी तथा दफ्तरों के कर्मचारियों एवं वेतनभोगी लोगों को समाविष्ठ करता है।)

मानक हिंदी कोश के अनुसार मध्यवर्ग "समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च, मध्य और निम्न) में से बुद्धिप्रधान वर्ग जो सामान्य आर्थिक तथा सामाजिक स्थितिवाला समझा जाता है और उच्चवर्ग (धनी) और निम्नवर्ग (श्रमिक) के बीच का माना जाता है।"[14] हिंदी के आलोचक भूपसिंह भूपेंद्र ने मध्यवर्ग के संदर्भ में लिखा है- "यह वर्ग उच्च तथा निम्नवर्ग की अपेक्षा अधिक व्यापक, संवेदनशील, प्रेरक तथा अपनी विशिष्ट दुर्बलताओं से ग्रस्त है।"[15] स्पष्ट है मध्यवर्ग का अस्तित्व अपने आप में समाज के श्रेणीकरण की

ओर संकेत करता है। अपनी विशिष्टता के कारण यह वर्ग महत्त्वपूर्ण बना है। डॉ. अर्जुन चव्हाण मध्यवर्ग के संदर्भ में लिखते हैं- ''मध्यवर्ग न यंत्र ने बनाया है न सरकारी कानून ने, यह तो सामंतवादी अर्थव्यवस्था के लोप तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नवोन्मेष से उच्च तथा निम्नवर्ग के बीच तीसरा वर्ग उदित हुआ जिसे मध्यवर्ग कहा जाता है।''[16]

अतः स्पष्ट है कि मध्यवर्ग का अपना अलग अस्तित्व है। यह वर्ग उच्चशिक्षित, ज्यादातर महानगरों में रहनेवाला अपनी अलग सांस्कृतिक धारणाओं से पोषित है। यह वर्ग उत्पादन, श्रम प्रतिष्ठा पर आधारित होने के साथ-साथ अधिक आबादीवाला है। उसका नामकरण आर्थिक-सामाजिक स्तर का प्रमाण है। नगरों, महानगरों में मध्यवर्गीय समाज पनप रहा है। इसके अंतर्गत किसी विशिष्ठ जात-धर्म-संप्रदाय के लोग नहीं आते हैं तो विशिष्ट आर्थिक स्तर के लोग आते हैं। आज जो विद्रोह या सामाजिक, जनसंचार या अन्य क्षेत्र में क्रांति हो रही है इसकी प्रमुख आधारशीला मध्यवर्ग है। यह वर्ग समाज के सभी क्षेत्रों से जुड़ा है। जैसे धर्म से लेकर विज्ञान तक। यह वर्ग अपनी प्रगति के साथ राष्ट्र के प्रगति में बहुमूल्य योगदान दे रहा है, स्पष्ट है राष्ट्रीय एकता-समता के विकास में प्राचीन काल से महत्त्वपूर्ण स्थान मध्यवर्ग रहा है, जो आज भी है। हिंदी साहित्यकारों ने इस वर्ग का सूक्ष्म चित्रण किया है ऐसा कहना उचित होगा।

1.4 भारत में मध्यवर्ग उद्‌भव और विकास -

'मध्यवर्ग' पूँजीवादी व्यवस्था की देन है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो इंग्लैंड में 14 वीं शती में मध्यवर्ग का उद्‌भव हुआ। इसका पूर्ण विकास अमरीका, इंग्लैंड, फ्रांन्स आदि देशों में हुआ। युरोप में हुई औद्यौगिक क्रांति से मध्यवर्ग को सामाजिक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग बना दिया। औद्योगिक क्रांति और शिक्षा प्रसार से समाज में हिसाब-किताब रखनेवाले, व्यापारी सफेदपोश नौकरी करनेवाले वर्ग का उदय हुआ, इसे ही 'मध्यवर्ग' कहा जाता है।

विदेशियों के भारत आगमन का भारतीय समाज पर भी प्रभाव पड़ा। मध्यवर्गीय दृष्टि से भारत का विचार किया जाए तो प्राचीन-काल से ही भारतीय समाज जाति प्रथा तथा वर्ण व्यवस्था में जकड़ा हुआ था। समाजशास्त्रीय दृष्टि से प्राचीन काल में भारतीय समाज का वर्गीकरण व्यवसाय के आधार पर हुआ था। प्राचीन काल में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य तथा शूद्र यह चार वर्ण माने गए थे। भारत में 16 वीं शती में पाश्चात्य लोगों का व्यापार की दृष्टि से आना,

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

भारतीयों का अंग्रेज, फ्रांसीसी, डचों और पोर्तुगीजों आदि के साथ संपर्क बढ़ना मुगल काल में भारतीय समाज का शासक और शोषित इन दो वर्गों में विभाजन होना, भारत में अंग्रेजों का आगमन, ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना, ब्रिटिश शासन व्यवस्था ने भारतीय समाज जीवन तथा समाज व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है, अंग्रेजों के शासनकाल में मध्यवर्ग का शिक्षित व्यावसायिकों, व्यापारियों, उद्‌योग कर्ताओं और कृषकों इन चार वर्गों में विभाजित होना, अंग्रेजों का आगमन और भारत में उनकी शासन नीति, सन् 1857 का प्रथम असफल स्वतंत्रता आंदोलन, प्रथम तथा द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध, अंग्रेजों द्‌वारा डाक, तार, रेल उद्‌योग, शिक्षा तथा विज्ञान आदि का विकास, स्वतंत्रता आंदोलन, भारत स्वतंत्रता आदि ने भारतीय मध्यवर्ग के विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। स्वतंत्रतापूर्व काल में शिक्षा विकास से शिक्षित मध्यवर्ग बढ़ने लगा तथा राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों ने इस वर्ग में वैयक्तिकता, स्वार्थी वृत्ति, बड़बोलापन, अहंकार आदि को बढ़ावा दिया है। राजनीतिक व्यवस्था के कारण समाज में कई कुप्रवृत्तियों का निर्माण हुआ। 'किरण बेदी' का विचार है- ''हमारा सामाजिक ढाँचा राजनीतिक ढाँचे से जुड़ा है। अस्थिरता हमेशा विकास के लिए गतीरोध बन जाती है। राजनीतिक अस्थिरता का प्रभाव शिक्षा और समाज पर पड़ता है।''[17] राजनीतिक भ्रष्टता के कारण समाज तथा परिवार भी प्रभावित है। भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, भाई-भतिजावाद, अवैध धंदे आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसका शिकार मध्यवर्ग ही है। डॉ. गंभीर के शब्दों में ''आज के बुद्‌धिजीवी राजनीतिक नेता के सामने आत्मसमर्पण कर चुके हैं। इन नेताओं के आदर्श खोखले हैं, चारित्र भ्रष्ट राजनीति इनका व्यवसाय है।''[18] अतः स्पष्ट है आजादी के आंदोलन में राजनीति तथा देशभक्ति का प्रमाण भी आज सत्ता प्राप्ति का साधन बनी है। इससे भी जन-जीवन प्रभावित है। परिवार व्यवस्था भी टूट रही है। संयुक्त परिवार की नींव हिलने से नया सामाजिक वर्ग तयार होने लगा है, वही 'मध्यवर्ग' बना।

स्वातंत्र्योत्तर काल में मध्यवर्ग के स्वरूप में अमूलाग्र परिवर्तन हुआ। देश की अर्थव्यवस्था में आए परिवर्तन, औद्‌योगिकरण, आधुनिकीकरण, नागरीकरण, पूँजीवादी व्यवस्था तथा तकनीकी ज्ञान आदि का प्रभाव आज के सभी क्षेत्रों पर पड़ा। सबसे अधिक असर मध्यवर्ग पर हुआ है। इस परिवेश से मध्यवर्ग के सिर्फ आर्थिक स्तर में ही बदलाव नहीं आया तो इनकी मानसिकता, सांस्कृतिकता में भी परिवर्तन हुआ है। नौकरी तथा शहर के आकर्षण के कारण आज

मध्यवर्गीय लोगों की सबसे ज्यादा संख्या दिखाई देती है। आज शहरों में डॉक्टर, वकील, अध्यापक, उद्योगपति, बैंक, इंडस्टियों में काम करनेवाले उच्च अधिकारी, अमीर लोग, मील मालिक, छोटे कारखानदार, प्रशासकीय अधिकारी, मेडिकल, इंजिनीयरिंग तथा अन्य व्यावसायिक संस्थाओं में उच्च-शिक्षा लेनेवाले छात्र, राजनीतिज्ञ आदि मध्यवर्ग के अंतर्गत आते हैं। आज मध्यवर्ग यंत्र का अंग बनता जा रहा है। मध्यवर्ग में पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण और आधुनिक परिवेश के कारण मध्यवर्ग आर्थिक, पारिवारिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं से पीड़ित है। पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति का परिणाम आज यत्र-तत्र दिखाई देता है। साहित्य में भी इसका चित्रण हो रहा है।

1.5 हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग -

पश्चिम में जहाँ उपन्यास ने जन्म लिया, इस बात को अनेक चिंतकों ने अनुभव किया कि उपन्यास ने महाकाव्य का स्थान प्राप्त किया है। आधुनिक काल में उपन्यास महाकाव्य की उस वर्णनात्मक विशेषताओं को पकड़ने का प्रयास कर रहा है, जो पदार्थ और आत्मा, जीवन और तत्त्व में सामंजस्य स्थापित करती है। सामान्य जन के जीवन का औदात्यपूर्ण चित्रण करनेवाले ऐसे अनेक उपन्यास लिखे गए जिन्हें 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' कहा गया है लेकिन इन महाकाव्यात्मक उपन्यासों की महाकाव्यात्मकता न तो उच्चवर्ग की है न तो निम्नवर्ग की, अपितु 'मध्यवर्ग' की है। डॉ. हरदयाल उपन्यास के संदर्भ में लिखते हैं- ''वस्तुतः उपन्यास मध्यवर्ग का ही महाकाव्य या प्रबंधकाव्य है।''[19]

हिंदी उपन्यास आधुनिक युग की देन है। 19 वीं सदी में उपन्यास विधा का जन्म हुआ है। प्रथम रूप में अंग्रेजी तथा बंगला भाषाओं के उपन्यासों का अनुवाद होता रहा है। हिंदी उपन्यास अनूदित, मौलिक तथा ऐतिहासिक पगडंड़ियों से होता हुआ समाज के बहुत बड़े वर्ग मध्यवर्ग के जीवन चेतना के चौराहे पर पहुँचा है। आज उपन्यास सामाजिक हो या व्यक्तिवादी या मनोवैज्ञानिक हो सभी में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण मिलता है।

उपन्यास के साथ मध्यवर्ग का दोहरा संबंध है। एक ओर वह उपन्यास का रचनाकार होता है और दूसरी ओर उसका पाठक एवं अस्वादक। किसी भी भाषा में उपन्यास का उद्भव और विकास मध्यवर्ग के उद्भव और विकास के साथ जुड़ा हुआ है। निम्नवर्ग का व्यक्ति

अपने शारीरिक श्रम से अपनी जीविका चलाता है। अपनी रोजी-रोटी की चिंता में न उसके पास साहित्य, कला आदि के लिए न तो समय बचता है न ही वह इसके सृजन, अस्वादन की क्षमता विकसित कर पाता है। यदि निम्नवर्ग का कोई व्यक्ति किसी प्रकार इस योग्य बन जाता है तो उसका वर्ग-चरित्र बदल जाता है। वह निम्नवर्ग से उठकर मध्यवर्ग का व्यक्ति बन जाता है। दूसरी ओर उच्चवर्ग अपने इंद्रिय तृप्ति और पूँजी रक्षा में ही व्यस्त होता है, इसी कारण स्वाभाविक रूप से वह कला, साहित्य, संस्कृति का संवाहक बन जाता है। उसके पास सृजन क्षमता होती है और परिष्कृत अभिरुचि भी होती है, उसके पास कला, साहित्य का आनंद लेने के लिए समय होता है। यही कारण है कि हमारे देश में विभिन्न भाषाओं का साहित्य अनिवार्यतः मध्यवर्ग से जुड़ा है।

हिंदी साहित्य में ज्यादातर उपन्यास मध्यवर्ग के होने के कारण इन्होने मध्यवर्ग को अधिक यथार्थ के साथ कलमबद्ध किया है। इसका मूल कारण है उनका जीवनानुभव। हिंदी उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने 'मध्यवर्ग' के पूरे अंतरंग को उनकी समस्याओं को, जीवन पद्धतियों का विवेचन किया है। डॉ. सुरेश बत्रा लिखते हैं- "प्रेमचंद पहले ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने राष्ट्रव्यापी जनचेतना और समाज सुधारवादी अवधारणा को व्यापक आवाज देने के लिए समाज के शोषित वर्ग की वास्तविक स्थिति को प्रकट किया।"[20] हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग-चित्रण परंपरा का विवेचन करते समय प्रेमचंद जी को केंद्र मानकर इस परंपरा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. प्रेमचंद-पूर्ववर्ती हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग।
2. प्रेमचंद कालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग।
3. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग।

1.5.1 प्रेमचंद-पूर्ववर्ती हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग -

अंग्रेजी शिक्षा एवं प्रभाव से साहित्य भी प्रभावित रहा, विभिन्न विधाओं का सृजन भी हुआ। हिंदी उपन्यास का जन्म अंग्रेज शासन की देन ही है। हमारे देश में जो सामाजिक क्रांतियाँ हो गई उनका और स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव समाज, संस्कृति, साहित्य, धर्म आदि पर हुआ है। प्रेमचंदपूर्व कालीन उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण शैशव रूप में पाया जाता है। हिंदी उपन्यासों में सर्व प्रथम श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा लिखित 'भाग्यवती' (1877) मध्यवर्गीय चित्रण

परंपरा का प्रथम उपन्यास है। इसमें मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण है। उपन्यास की नायिका भाग्यवती जो मध्यवर्ग से सबंध रखती है, पति से अनबन होने पर व्यापार करके जीवनयापन करती है। डॉ. अर्जुन चव्हाण के अनुसार- ''फुल्लौरी के इस उपन्यास में मध्यवर्ग के पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने सामाजिक चेतना का संचार किया है।''[21] लगता है सामाजिक परिवर्तन में इस रचना का अपना महत्त्व है।

उन्नीसवीं शती में विकसित हो रहे मध्यवर्गीय समाज का एक और चित्र लाला श्रीनिवास दासजी ने अपने उपन्यास 'परीक्षा गुरु' (1882) में रेखांकित किया है। इसमें भारतीय मध्यवर्गीय समाज में बढ़ रहे अंग्रेजी शिक्षा का आकर्षण, युवकों की विन्यासी प्रवृत्ति, आडंबरप्रियता, अकर्मण्यता, झूठी शान-शौकत आदि का चित्रण नायक मदनमोहन के द्वारा किया है। भारतेंदु ने भी 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' में मध्यवर्गीय समाज का चित्रण किया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में मनोरंजक, तिलस्मी, ऐयारी, जासूसी एवं ऐतिहासिक उपन्यास लिखे इसमें देवकीनंदन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, गोपाल गहमरी, वृंदावनलाल वर्मा आदि। इन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण तो नहीं किया लेकिन मध्यवर्गीय पाठक को अपने उपन्यास की ओर जरूर आकर्षित किया।

'मध्यवर्ग' चित्रण परंपरा में बालकृष्ण भट्ट का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा लिखित 'सौ अजान एक सुजान' तथा 'नूतन ब्रह्मचारी' मध्यवर्गीय समाज के आदर्शात्मक तत्त्वों का संवाहक है। इन उपन्यासों में आडंबरप्रियता, खुशामदी प्रवृत्ति के साथ आदर्श संस्कारों का भी चित्रण किया है। पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अपने उपन्यास 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' में तत्कालीन मध्यवर्गीय समाज की विवाह समस्या, प्रेम समस्या, नारी समस्या, सामाजिक कुरीतियों का चित्रण किया। लज्जाराम मेहता ने 'धूर्त रसिकलाल', 'स्वतंत्र रमा', 'परतंत्र लक्ष्मी', 'हिंदू ग्रहस्थ', 'आदर्श दंपत्ति' आदि सामाजिक उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। ब्रजनंदन सहाय ने अपने उपन्यास 'राजेंद्र मालती', 'अद्भूत प्रायश्चित', 'राधाकांत' आदि में मध्यवर्गीय प्रेम की समस्या, दुराचार, आर्थिक समस्या आदि का चित्रण है।

अतः प्रेमचंद पूर्वकाल में अनेक रचनाकारों ने मध्यवर्गीय जीवन को अपने रचनाओं का विषय बनाकर उनकी रचनाओं, स्थिति एवं गति का अंकन किया है। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में मध्यवर्ग का जो चित्रण मिलता है वह शैशव रूप में है लेकिन आगे के मध्यवर्ग जीवन चित्रण के लिए ठोस आधार प्रधान किया। जिससे आगे के उपन्यासकारों ने अपना दायित्व निभाया है।

1.5.2 प्रेमचंद कालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग -

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में जिस समय प्रेमचंद का आविर्भाव हुआ और हिंदी उपन्यास कल्पना की उड़ान तथा मनोरंजन की धारणा को छोड़कर सामाजिक समस्या आम-आदमी के जन-जीवन के साथ जुड़ गया। प्रेमचंद ने साहित्य को महलों तथा राजदरबारों से निकालकर झोपड़ों, आम-आदमियों के घरों, मजदूरों तक पहुँचाया। प्रेमचंद का जीवनानुभव बहुत विलक्षण एवं कटु रहा है। प्रेमचंद ने अपना जीवन मध्यवर्गीय समाज में यापन किया तथा उसकी समस्याओं को अनुभूत भी किया है। इसी वजह से 'सेवासदन' (1918) से लेकर 'गोदान' (1936) तक के श्रेष्ठ उपन्यासों में भारतीय समाज के सभी वर्गों का यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रेमचंद के साहित्य में मध्यवर्गीय समाज चित्रण की प्रमुखता है। उनका प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' (1918) में अर्थाभाव में मध्यवर्गीय व्यक्ति को कितना पतनोन्मुख बनना पड़ता है। इसमें वेश्या समस्या तथा स्त्री शिक्षा, दहेज प्रथा आदि का चित्रण नायिका 'सुमन' के द्वारा किया है। प्रेमचंद के अन्य उपन्यास 'वरदान', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'प्रतिज्ञा', 'कायाकल्प', 'निर्मला' में भी मध्यवर्ग का चित्रण है। 'रंगभूमि' में ताहिर अली सोफिया, सोफिया का परिवार, माहिर, किया जैसे पात्र मध्यवर्ग से संबंध रखते हैं जो कि मध्यवर्ग की बेरोजगारी झूठी शान-शौकत, अर्थाभाव तथा स्वार्थी मनोवृत्तियाँ-धनलोलुपता जैसी समस्याओं को प्रकट करते हैं। 'प्रेमचंद' का 'गबन' उपन्यास मध्यवर्ग का चित्रण करनेवाली सबसे सशक्त कृति है। इसमें रमानाथ और जालपा द्वारा मध्यवर्ग की आर्थिक समस्या, आत्म प्रदर्शनवादी प्रवृत्ति, आभूषण प्रेम आदि का चित्रण है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं कि "मध्यवर्ग आडंबर वृत्ति और खोखलेपन का जैसा चित्रण 'गबन' में मिलता है, वह विश्वसनीयता की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।"[22] 'निर्मला' में भी मध्यवर्गीय परिवार के व्यथा की कथा है। 'गोदान' (1936) मुंशी प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ रचना है। उपन्यास का नायक होरी एक किसान है। इस उपन्यास में मध्यवर्ग का चित्रण बहुत कम है।

'गोदान' में रिश्वतखोर दरोगा और बेदखली कलेक्टर, तहसीलदार, जमीनदार, रायसाहब, प्रोफेसर मेहता, मालती, मिस्टर खन्ना आदि पात्र मध्यवर्ग हैं। प्रेमचंद की अंतिम रचना 'मंगलसूत्र' में भी पात्र देवकुमार द्वारा मध्यवर्गीय परिवार के साहित्यिक आर्थिक कठिनाइयों का चित्रण किया है।

प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के अलावा जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यास 'कंकाल' में मध्यवर्गीय जीवन के न्हासोन्मुख प्रवृत्तियों का तो 'तितली' में नायिका 'तितली' द्वारा मध्यवर्गीय परिवर्तन तथा नारी प्रगतिशीलता को स्पष्ट किया है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'अलका', 'निरूपमा', 'काले कारनामे' तथा 'कुल्लीभाट' में मध्यवर्ग की दुर्बलताओं का चित्रण है। विश्वंभरनाथ 'कौशिक' ने भी 'माँ' और 'भिखारिणी' में मध्यवर्ग की स्वार्थी दृष्टि, आर्थिक संकट, वेश्या समस्या, चरित्रहीनता का चित्रण किया है। वृंदावनलाल वर्मा ने अपने सामाजिक उपन्यास 'लगन', 'संगम', 'प्रस्थागत', 'कुंडलीचक्र' तथा 'प्रेम की भेंट' और 'माटी हो गई सोना' आदि में मध्यवर्ग की मजबूरी, गिरता आर्थिक स्तर, खंडित व्यक्तित्व का चित्रण किया है।

प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकारों में पांडेय बेचेन शर्मा 'उग्र' ने समाज के घृणित पक्षों को नंगा करके समाज के सामने रखा। उन्होंने 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी', 'सरकार तुम्हारी आँखों में', 'चंद हसीनों के खतूत' जीजाजी आदि में तो ऋषभचरण जैन ने 'दिल्ली का व्यभीचार', 'भाई', 'चाँदनी रात', 'तपोभूमि', 'वेश्यापुत्र', 'चंपाकली' आदि उपन्यासों में मध्यवर्ग की विकृतियों, विडंबनाओं, नैतिकता, कुत्सित प्रवृत्तियाँ, वेश्या समस्या, विधवाओं की दुर्गतियों का चित्रण किया है। भगवती प्रसाद वाजपेयी ने 'प्रेम पथ', 'मीठी चुटकी', 'लालिमा', 'दो बहने', 'चलते-चलते', 'यथार्थ से आगे', 'उनसे न कहना' में मध्यवर्गीय समस्या एवं जीवन संघर्ष का चित्रण किया है। प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने अपने 'विदा', 'विजय', 'विसर्जन', 'बयालीस', 'वेदना' में मध्यवर्ग की प्रगति राजनीतिक आदर्श, पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव आदि का चित्रण किया है।

अतः प्रेमचंदकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय जीवन को बड़ी सजगता से रेखांकित किया है। प्रेमचंद का युग सामाजिक संक्रमण का युग था। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति के कारण मध्यवर्ग में आए बदलाव को गहराई से अंकित किया है। इस काल में मध्यवर्ग एक ओर प्रगतिशील विचारों, सभ्यताओं, आचारों को अपनाने लगा था तो दूसरी ओर पारंपरिक रीति-

रिवाजों, रूढ़ियों से जकड़ा था। मुन्शी प्रेमचंद ने मध्यवर्ग के अंतरंग से जुड़कर उसका यथार्थ अंकन किया है।

1.5.3 प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग -

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में भारतीय समाज के बदलते रूप का चित्रण मिलता है। भारतीय समाज में व्याप्त क्रांतिकारी आंदोलन, स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक अशांतता, देश विभाजन आदि परिस्थितियों ने भारतीय समाज जीवन तथा भारतीय साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। इसी वजह से भारतीय मध्यवर्ग में भी तेजी से परिवर्तन आने लगे थे। भारतीय मध्यवर्ग जैसे-जैसे विकसित होता गया वैसे-वैसे उसमें व्यक्तिवादिता बदलती गई। प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग के प्रखर हो रहे व्यक्तिवाद को अनेक रूपों में प्रतिबिंबित होते हुए दिखाई देता है। जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय और डॉ. देवराज आदि उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय व्यक्ति की मनोवैज्ञानिकता तथा उनके द्वंद्व को भीतर तक झाँककर प्रकट किया है।

जैनेंद्रकुमार ने 'सुनिता' (1934) में मध्यवर्गीय नारी सुनिता के अंतर्द्वंद्व, कर्तव्य, त्याग आदि का चित्रण किया है। 'त्यागपत्र' (1937) में 'मृणाल' द्वारा मध्यवर्गीय नारी की हीन दशा, उसकी विवेचना तथा मध्यवर्गीय परिवार के खोखलेपन एवं संकुचित वृत्ति का चित्रण किया है। 'त्यागपत्र' के संदर्भ में डॉ. हरदयाल का कथन द्रष्टव्य है- ''त्याग पत्र की मृणाल शारीरिक शुद्धता, सतीत्व के स्थान पर मानसिक शुद्धता, नए सतीत्व की खोज पर अपना जीवन दाँव पर लगा देती है। वह समाज तोड़ना नहीं चाहती, कोई भी मध्यवर्गीय व्यक्ति समाज को तोड़ना नहीं चाहता लेकिन बदलना अवश्य चाहता है। यह मृणाल की मध्यवर्गीय व्यक्तिवादिता है।''[23] अतः इससे स्पष्ट है कि मध्यवर्गीय नारी खुद को बंधनों, आदर्शों, रीति-रिवाजों, रूढ़ियों से आजाद कराना चाहती है। जैनेंद्रकुमार ने अपने 'कल्याणी', 'सुखदा', 'विवर्त', 'व्यतीत' में मध्यवर्गीय परिवार के बनते-बिगड़ते रिश्ते, टूटते दांपत्य जीवन, जर्जरित विवाह संस्था, नारी का मानसिक, सामाजिक एवं शारीरिक शोषण, स्वार्थी प्रेम भावना, प्रेम में वासना की प्रधानता आदि का चित्रण किया है। अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, इलाचंद्र जोशी, उषादेवी मित्रा आदि साहित्यकारों ने इस वर्ग की आधुनिक तस्वीर हमारे सामने रखी है। उषादेवी मित्रा ने अपने उपन्यास 'वचन का मोल', 'पिया', 'जीवन की मुस्कान', 'नष्ट नीड़', 'सोहनी', 'आवाज' आदि में वकील,

अध्यापक, छात्र, पत्रकार, कलाकार जैसे मध्यवर्ग का चित्रण किया है। हिंदी उपन्यासों में प्रेमचंद के बाद अज्ञेय का श्रेष्ठ स्थान है। अज्ञेय के 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास का नायक शेखर जो मध्यवर्गीय व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है उसके द्वारा इस वर्ग का विद्रोह, आक्रोश, मानसिक द्वंद्व और बौद्धिक जागरूकता को शब्दबद्ध किया है। 'नदी के द्वीप' में इस वर्ग की विवाह, प्रेम, सेक्स आदि समस्याओं को फूटकर अभिव्यक्ति मिली है। इस वर्ग की बदलती तस्वीर पात्र रेखा, गौरा, भुवन आदि में दिखाई देती है। 'अपने अपने अजनबी' में संश्लिष्ट रूप में इस वर्ग का चित्रण मिलता है। इसमें योके, सेल्मा द्वारा कुंठा, अकेलापन, संत्रास, निराशा, आत्मपीड़ा आदि समस्याओं का चित्रण मिलता है, जो आधुनिक मध्यवर्ग को जर्जरित कर रही है। भगवतीचरण वर्मा ने 'पतन' (1928), 'चित्रलेखा' (1939), 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' (1940), 'आँखरी दाँव' (1950), भूले-बिसरे चित्र' (1959), 'वह फिर आई' (1960), 'सामर्थ्य और सीमा' (1962) तथा इलाचंद्र जोशी ने 'मृणमयी', 'सन्यासी', 'प्रेत और छाया', 'जहाज का पंछी' आदि उपन्यासों में इस वर्ग के अर्थाभाव, प्रेम समस्या, मानसिक दुर्बलता, अनैतिक संबंध, यौन लिप्सा, कुंठा, घूटन आदि को अभिव्यक्ति दी गई है। मार्क्सवादी उपन्यासकार यशपाल ने 'दादा कामरेड', 'पार्टी कामरेड', 'देशद्रोही', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा सच' आदि उपन्यासों में इस वर्ग की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का अंकन किया है।

रांगेय राघव तथा नागार्जुन आँचलिक उपन्यासकार होकर भी अपने उपन्यासों में ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन की स्थिति, स्वरूप एवं गति को रेखांकित किया है। अमृतराय ने 'नागफनी का देश', 'हाथी के दाँत', 'बीज में मध्यवर्ग' के पारिवारिक सांस्कृतिक स्थिति का अंकन किया है। डॉ. सुधा सिंह का कथन है- "अमृतराय के उपन्यासों का केंद्र भारतीय जन-जीवन का मध्यवर्ग ही है, जिसकी परिवेशगत अनंत परेशानियाँ और मन में विकास की असीमित आकांक्षाएँ रहती हैं।"[24] 'भाटियाली' में मध्यवर्गीय चरित्रों के प्रेमसंबंध तो 'जंगल' में मध्यवर्गीय चरित्रों की स्वार्थी नीति और वासनापरक दृष्टि का चित्रण किया है। 'नागफनी' का देश में मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त विसंगति बोध और अलगाव बोध का वर्णन है। डॉ. सुधा सिंह का कथन इसका प्रमाण है- "यह उपन्यास आज के आधुनिक युग में हजारों, लाखों मध्यवर्गीय परिवारों के टूटते हुए दांपत्य जीवन की घुटनभरी दास्तान है।"[25] अतः स्पष्ट है कि अमृतरायने

मध्यवर्गीय जीवन को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया है। धर्मवीर भारती ने 'गुनाह का देवता' में मध्यवर्गीय युवकों की भावुकता और वासना का चित्रण किया है। धर्मवीर भारती के 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के संदर्भ में रामदरश मिश्र का कथन है- ''लेखक ने निम्न-मध्यवर्ग संघर्षपूर्ण, टूटे हुए, श्रृंखलित जीवन का सही चित्र उपस्थित किया है।''[26] देवराज उपध्याय और नरेश मेहता ने अपने उपन्यासों द्वारा मध्यवर्गीय व्यक्तियों का मानसिक द्वंद्व, अकेलापन, अलगावबोध, टूटन को स्पष्ट किया है।

स्वाधीनता के बाद पहले दशक में उपन्यासकार की जो एक पीढ़ी आई वह नई कहानी आंदोलन के साथ जुड़ गई। इस पीढ़ी के प्रायः सभी उपन्यासकार शहरी मध्यवर्ग के व्यक्ति हो और अपने उपन्यासों में शहरी मध्यवर्गीय जीवन और उसकी समस्याओं का चित्रण करने लगे। आधुनिक मध्यवर्ग के जीवन में आए परिवर्तन तथा मध्यवर्गीय जीवन के दौड़-धूप का सटीक अंकन किया। इन उपन्यासकारों में मुक्तिबोध, राजेंद्र यादव, कृष्ण बलदेव वैद्य, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवंश, लक्ष्मीकांत आदि आते हैं। आधुनिक उपन्यासकारों ने बदलते महानगरीय जीवन, महानगरीय जीवन की संत्रास, घूटन, दिशाहीनता, खोयी हुई मानसिकता, टूटते मानवी मूल्य, बदलते राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक संदर्भ आदि को यथार्थ रूप में शब्दबद्ध किया है। मुक्तिबोध ने 'विपात्र' और 'सतह से उठता आदमी' आदि तो विष्णु प्रभाकर ने 'अद्र्धनारीश्वर', 'तट के बंधन', 'निशीकांत' तथा रमेश बक्षी ने 'बैसाखियोंवाली इमारत' आदि उपन्यासों में मध्यवर्ग के टूटते दांपत्य जीवन, अर्थाभाव, नारी अस्तित्व, नारी शोषण, अकेलेपन आदि समस्याओं का चित्रण किया है। मुस्लिम मध्यवर्गीय जीवन के कथाकार 'शानी' ने अपने उपन्यास 'काला जल' में मध्यवर्ग का संघर्ष, मकान की समस्या, अनैतिक संबंध तथा यौन जीजिविषा की समस्या, अर्थाभाव, पारिवारिक विघटन एवं दांपत्य जीवन में अनबन आदि का चित्रण किया है। इस उपन्यास में बब्बन तथा सल्लो आपा के परिवार मध्यवर्ग से संबंध रखते हैं। कृष्ण बलदेव वैद्य ने अपने उपन्यास 'नर नारी' में तथा रविंद्र कालिया ने खुदा सही सलामत है में इस वर्ग की समस्याओं को आवाज दी है।

मोहन राकेश खुद मध्यवर्ग में जीवन बीताते हैं, इसी वजह से उन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग के पात्रों द्वारा विदेश के प्रति आकर्षण, दिशाहीनता, अहं से पीड़ित तथा

जीवन पद्धतियों का चित्रण किया है। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास को बदलते हुए मानवी संबंधों का प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है। इसमें दिल्ली शहर के पत्रकार, कलाकार, लेखक और नौकरीपेशा लोगों का चित्रण है। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास के संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक गोपाल राय लिखते हैं- ''इस उपन्यास में 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, छठे दशक की दिल्ली पृष्ठभूमि में कलाकारों, लेखकों और पत्रकारों की अंदरूनी जिंदगी का, उनके परिवेश से संघर्ष, समझौते तथा तज्जन्य निराशा और कुंठा का अंकन किया है।''[27] इस उपन्यास में हरबंस, नीलिमा, मधुसूदन, सुषमा, शुक्ला, सुरजीत, शिवमोहन आदि पात्रों द्वारा मध्यवर्गीय जीवन की अस्थिरता, असुरक्षितता, टूटन, रीक्तता, कुंठित व्यक्तित्व, टूटते दांपत्य जीवन, विघटन की प्रक्रिया को रूपायित किया है। 'आनेवाला कल' तथा 'अंतराल' में मध्यवर्गीय विवशता एवं विद्रोह को स्पष्ट किया है। आधुनिक काल में अपने लेखन और जीवन में निरंतर जूझनेवाले राजेंद्र यादव मध्यवर्ग की पीड़ा व्यक्त करने में सफल रहे हैं। 'सारा आकाश' उपन्यास के मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार की जर्जरित प्रथा को बेनकाब कर, अर्थाभाव, युवकों का निकम्मापन एवं विवशता को तो 'उखड़े हुए लोग' में मध्यवर्ग की प्रगतिशीलता को अंकित किया है। 'शह और मात' में मध्यवर्गीय लेखकीय जीवन, उसकी समस्या, टूटनभरा महानगरीय जीवन, आत्मग्लानी आदि को दर्शाया है। निर्मल वर्मा आधुनिक पीढ़ी के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में आज के युग की संवेदना, पीड़ा, अलगाव की अनुभूति, अतीत से कटकर जीने की समस्या, वर्तमान को सर्वस्व मानने की तीव्र लालसा, अजनबियों के बीच का जीवन आदि को रूपायित किया है। वर्मा जी के कथा-साहित्य में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है, जिसमें विवाह प्रथा का विरोध, विद्रोह की भूमिका, स्वच्छंदी विचार, आत्मकेंद्रित वृत्ति, व्यक्तिवादी दृष्टिकोण, बेरोजगारी, अर्थाभाव, सेक्स के प्रति आकर्षण, अनैतिक यौन संबंध, निराशा, अकेलापन आदि का चित्रण 'वे दिन', 'लालटीन का छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'रात का रिपोर्टर' आदि उपन्यासों में मिलता है।

आधुनिक उपन्यासकारों में कमलेश्वर ने 'डाक बंगला', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'काली आँधी', 'आगामी अतीत', 'तिसरा आदमी', 'वही बात' आदि उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों, जटिलताओं, भटकाव, अंधी दौड़-धूप की जिंदगी, राजनीति और मध्यवर्गीय नारी की स्थिति आदि का चित्रण किया है। इस पर प्रकाश डालते हुए डॉ.

सत्यजीत चिखलीकर कहते हैं- ''कमलेश्वर जी की विचारधारा पर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के संघर्ष का तथा मानसिक द्वंद्व का गहरा प्रभाव है।''[28] भीष्म साहनी ने 'झरोखे और कड़ियाँ' में रूढ़ि तथा संस्कारगत जड़ता से ग्रस्त मध्यवर्गीय परिवार में व्याप्त हीन भाव, ईर्ष्या, आकांक्षा और कामग्रंथियों पर सोचा है। गिरिश अस्थाना के 'धूप छाँही रंग' (1970) में कलाकार सुकांत के घर का घूटनपूर्ण वातावरण का वर्णन है। सुरेश सिन्हा ने 'पत्थरों का शहर' में उच्च-मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण है। हृदयेश के 'सफेद घोड़ा काला सवार', 'साँड', 'पुनर्जन्म' आदि उपन्यासों में कस्बाई मध्यवर्ग का चित्रण मिलता है। रामदरश मिश्र ने 'अपने लोग' (1976) में कस्बाई मानसिकतावाले मध्यवर्गीय अध्यापक, डॉक्टर, वकील, कवि और बुद्धिजीवी समुदाय का यथार्थ जीवन चित्रित किया है। महिप सिंह 'यह भी नहीं' (1976) तो योगेश गुप्त ने 'उनका फैसला' (1977), रमेशचंद्र शहा ने 'गोबर गणेश' (1978) और ज्ञान चतुर्वेदी के 'बारामासी' (1999) में मध्यवर्गीय तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण एवं विद्रुपताओं को शब्दबद्ध किया है। विनोदकुमार शुक्ल ने 'नौकर की कमीज' में मध्यवर्ग की विवशता का, शक्तिशाली उच्चवर्ग द्वारा मध्यवर्ग का कातिलाना शोषण पात्र क्लर्क संतू बाबू के माध्यम से चित्रण किया है।

नई पीढ़ी के उपन्यासकारों में महिला लेखिकाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, गितांजलि श्री आदि हैं। इन लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय नारी को केंद्र बनाया है। कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' में एक पुराने मूल्यों को लेकर जीते हुए मध्यवर्गीय पंजाबी परिवार का चित्रण है। इसमें एक मध्यवर्गीय स्त्री 'मित्रो' का विद्रोह है। ममता कालिया ने 'बेघर' उपन्यास में मध्यवर्गीय संस्कारों और मूल्यों की मार सहती स्त्री का अंकन किया है। मन्नू भंडारी जी ने 'आपका बंटी' में आधुनिक मध्यवर्गीय समाज में स्त्री-पुरुष के बदलते संबंधों, तलाक और बच्चों पर पड़नेवाले उसके प्रभाव का प्रामाणिक चित्रण किया है। तो 'महाभोज' में राज्य के विधायक के चुनाव को केंद्र में रखा और स्वातंत्र्योत्तर भारत में गणतंत्र की विड़ंबना को चित्रित कर मध्यवर्गीय व्यक्ति की राजनीतिक एवं राजनेताओं के प्रति वितृष्णा एवं घृणा को स्पष्ट किया है। डॉ. अरुणा लोखंडे '' 'महाभोज' उपन्यास को सामाजिक और राजनीतिक उपन्यास मानते हैं।''[29] मन्नू भंडारी के साथ कृष्णा सोबती और उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में भी मध्यवर्गीय अनुभव व्यक्त हुआ है लेकिन यह मन्नू

भंडारी के अनुभव से भिन्न है। वह भिन्नता अनुभव की भिन्नता है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'ऐ लड़की', 'मित्रो मरजानी', 'जिंदगीनामा', 'यारों के यार' आदि तो उषा प्रियवंदा ने 'रूकोगी नहीं राधिका', 'पचपन खंबे लाल दीवारें' में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। उषा प्रियवंदा ने स्त्री मन का द्वंद्व, घूटन, अकेलापन, विदेश के प्रति आकर्षण, निराशा अहंभाव आदि मध्यवर्गीय स्थिति का अंकन किया है। इन लेखिकाओं के साथ मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा', 'वंशज', 'अनित्य' तथा मंजुला भगत का 'लेडी क्लब', 'अनारो', कृष्णा सोबती का 'टपरेवाले', नासिरा शर्मा का 'तुम डाल-डाल हम पात-पात', 'शाल्मिकी', 'जिंदा मुहावरें', 'अक्षय वट', शशीप्रभा शास्त्री का 'कर्करेखा' आदि उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और भौतिक समस्याओं को रूपायित किया है। इन महिला कथाकारों के संदर्भ में दिनेश द्विवेदी लिखते हैं- ''पुरुषों के सामंती और भोगवादी,कैकटसी नजरिए से चुभी हुई, बिंधी हुई, समर्पित भावुक नारी की मूक चीत्कार को यदि किसी अपने मजबूत कथानकों और तिलमिला देनेवाली समस्याओं को व्यक्त किया है तो वह है कृष्णा अग्निहोत्री।''[30] अपने उपन्यास 'टपरेवाले' में मध्यवर्गीय नारी की व्यथा को स्पष्ट किया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि श्रद्धाराम फुल्लौरी के भाग्यवती तथा लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' से ही मध्यवर्गीय जीवन चित्रण कि शुरूआत हुई जिसे प्रेमचंदकालीन उपन्यासकारों ने उनके समस्याओं एवं स्थिति-गति को रेखांकित किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में आधुनिकीकरण, यांत्रीकीकरण, शिक्षा विकास के कारण मध्यवर्ग में परिवर्तन दिखाई देता है। मध्यवर्ग आज मशीन का अंग बनता जा रहा है। अपनी आकांक्षाओं की अपूर्ति के कारण उसमें अनेक विकृतियों ने घर कर लिया है। आज के उपन्यासकार अपनी प्रतिभा तथा स्वानुभव द्वारा मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण कर रहे हैं। आज समाज में पनप रहे बाजारवाद, देश-विदेश के पूँजीपति और उद्योगपति मध्यवर्ग को गुलामी के नए पट्टे में जकड़ना चाहते हैं यही आज के औपन्यासिक विज़न में दिखाई देता है। स्पष्ट है कि हिंदी उपन्यास का अब तक का इतिहास 'मध्यवर्ग' का इतिहास है। भारतीय मध्यवर्ग के द्वारा लिखित इतिहास है और भारतीय मध्यवर्ग के लिए लिखा हुआ इतिहास है। आज के उपन्यासों की अंतर्वस्तु इस बात का

प्रमाण है कि भारतीय समाज में विशेषतः मध्यवर्गीय समाज में दूरगामी और मौलिक परिवर्तन हो रहे हैं। यह समाज अपनी मध्यकालीन स्थिरता एवं जड़ता को तोड़कर आधुनिक बन रहा है।

निष्कर्ष -

मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास इस अध्याय में समाज, सामाजिक वर्गीकरण, मध्यवर्ग परिभाषा एवं स्वरूप, हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग चित्रण की परंपरा आदि का अध्ययन किया है। साहित्य और समाज का परस्पर संबंध रहा है। साहित्य के कारण समाज सुसंस्कारी बनता है तथा समाज के कारण साहित्य का विकास होता है। समाज वह व्यवस्था है जिसके द्वारा व्यक्ति सामुदायिक रूढ़ि, परंपरा, सभ्यता का विकास करता है तथा मनोभावों को व्यक्त कर अन्य लोगों के कल्याण के लिए अनुभवों को हस्तांतरित करती है। समाज और समूह में अंतर है। समाज विकसित एवं स्थायी व्यवस्था है। साहित्यकार इसका एक अंग होता है।

भारतीय समाज की नीव धर्म, कर्म, जाति-व्यवस्था रही है। यह समाज चार वर्ण, चार आश्रम, अनेक जातियाँ तथा संप्रदायों में विभाजित रहा है। धर्मग्रंथ, धर्म-स्थल, धार्मिक व्यक्ति, इसके आधार हैं, परंतु आज जाति पर अर्थ का प्रभाव अधिक हो रहा है। अर्थ आज समाज की बुनियाद बन रहा है। समाज के विभाजन का यही आधार बन रहा है। समाज को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया है- उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग। उच्चवर्ग पूँजीवादी, विलासी सभी सुखसुविधाओं को भोगनेवाला, उत्पादन साधनों पर अधिकार रखनेवाला मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का शोषण करनेवाला दिखाई देता है। मध्यवर्ग महानगरों में बसनेवाला तथा आधुनिक जीवन की घूटन, अकेलापन, रीक्तता, मानसिक संघर्ष आदि समस्याओं से पीड़ित दिखाई देता है। निम्नवर्ग में समाज के निचले स्तर के लोग जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है तथा अपनी सामान्य आकाक्षाओं की प्राप्ति के लिए अपने स्वाभिमान की तिलांजलि देनी पड़ती है।

भारत देश ग्रमों, महानगरों, बस्तियों का देश है। आज के नागरीकरण, औद्योगिकीकरण, शहरों का निर्माण हुआ। शिक्षा प्राप्ति, रोजगार की उपलब्धि आदि के कारण गाँव के लोग शहरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। परिणामतः समाज व्यवस्था का रूप बदलने लगा। इसमें नए वर्ग मध्यवर्ग का निर्माण हुआ। नगरों की ओर आकर्षित परिवारों के कारण महानगरों में नई-नई समस्याएँ उत्पन्न हुई। साहित्यकारों ने इसकी ओर संकेत किया। मध्यवर्ग वह

वर्ग है जो शानो-शौकत को पाने की आकांक्षा रखता है, लेकिन अपनी दुर्बल मानसिकता, आर्थिक विपन्नता, अहं की अधिकता, पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण, पुराणे रीति-रिवाजों की जकड़न के कारण महानगरीय जीवन की कुंठा, घुटन, अकेलापन में जीवन बिताने के लिए अभिशप्त है।

मध्यवर्ग पाश्चात्य संस्कृति की देन है। भारत में मध्यवर्ग का उद्भव अंग्रेजों के शासन काल में हुआ। सामाजिक क्रांति, औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण, नागरीकरण तथा गतिशील महानगरीय जीवन आदि के कारण मध्यवर्ग की जीवनशैली में निरंतर परिवर्तन होता रहा है।

हिंदी उपन्यासों में श्रद्धाराम फुल्लोरी के 'भाग्यवती' तथा लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' में मध्यवर्गीय चित्रण परंपरा का आरंभ हुआ। प्रेमचंद तथा प्रेमचंदयुगीन रचनाकारों ने इस वर्ग का गहराई में जाकर तथा संवेदनात्मक दृष्टि से चित्रण किया। आज के उपन्यासों का केंद्रीय विषय बना है- मध्यवर्गीय जीवन। मध्यवर्गीय रचनाकारों ने स्वानुभवों से इस वर्ग की स्थिति एवं व्यथा को व्यक्त कर रहे हैं। यहाँ स्पष्ट है किसान, व्यापारी, नौकरी करनेवाले, अध्यापक, डॉक्टर आदि मध्यवर्ग में आते हैं। रोजी-रोटी पानेवाला यह समाजवर्ग मध्यम वर्ग में अर्थाभाव, आपसी प्रेम की कमी, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी आदि महत्त्वपूर्ण समस्या है। शिक्षा प्रसार, रोजगार की उपलब्धि, आपसी प्रेम, भाईचारा को बढ़ावा देने से यह समस्या हल हो सकती है। विवेच्य उपन्यासकारों ने प्रभावी ढंग से मध्यम वर्ग का चित्रण करके उनकी सामाजिकता को दर्शाया है। साहित्यकार समाज जागृती का कार्य कर रहे हैं। मध्यवर्ग के चित्रण में बाह्य चित्रण अधिक है अर्थात् सभी साहित्यकार समाज से जुड़े हुए हैं। अब सामाजिक ढाँचा बदल रहा है, इसी कारण मध्यवर्ग का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ सूची

1. मधुमती - अगस्त, 1998, पृ. 91
2. राजेश शर्मा - 125 आधुनिक हिंदी निबंध, पृ. 11
3. संपा. नगेंद्रनाथ वसू - हिंदी विश्वकोश, पृ. 599-600
4. सं. श्रीनवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 1407
5. डॉ. कुँवरपाल सिंह - हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ. 108
6. यज्ञदत्त शर्मा - हिंदी लघु निबंध, पृ. 168
7. अरस्तू - पोएटिक्स, पृ. 190
8. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश, भाग-1, पृ. 612
9. डॉ. भूपसिंह भूपेंद्र - मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना और हिंदी उपन्यास, पृ. 5
10. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 83
11. वही, पृ. 73
12. Oxford English Dictionary, Page - 1247
13. Encyclopeadia of Social Science, Page - 407
14. डॉ. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, खंड-चौथा, पृ. 284
15. भूपसिंह भूपेंद्र - मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना और हिंदी उपन्यास, पृ. 12
16. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 76
17. किरण बेदी - मोर्चा दर मोर्चा, पृ. 80
18. डॉ. एस्. गंभीर - साठोत्तर हिंदी काव्य में राजनीतिक चेतना, पृ. 84
19. डॉ. हरदयाल - भाषा, पृ. 47
20. डॉ. सुरेश बत्रा - हिंदी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य, पृ. 8
21. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 194
22. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास, पृ. 643
23. डॉ. हरदयाल - भाषा, पृ. 55

24. डॉ. सुधा सिंह - अमृतराय का कथा साहित्य : मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 204
25. वही, पृ. 204
26. डॉ. रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, पृ. 154
27. गोपाल राय - हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ. 276
28. डॉ. सत्यजित चिखलीकर - कमलेश्वर के उपन्यास, पृ. 210
29. डॉ. अरुणा लोखंडे - समकालीन हिंदी कथा साहित्य में जनचेतना, पृ. 143
30. दिनेश द्विवेदी - चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ, पृ. 9